IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

''प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि का एक अध्ययन''

सत्यवीर
पी–एच.डी. (शोधार्थी)

डॉ. रीटा झाझड़िया
शोध निर्देशिका

शोध आलेख सार – यदि हम आज के परिवेश पर नजर डालें तो हमारी शिक्षक, शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं है। पुराने एवं आधुनिक शिक्षकों को देखें, शिक्षण व्यवसाय में आये रिसावों को देखें, शिक्षकों में व्याप्त अपने जाति वर्ग, समुदाय को अन्य समुदाय व वर्गों से ऊपर उठाने की भावना अधिक से अधिक लाभ तथा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए संकीर्ण व्यवसायिक स्वरूप को देखें तो एक ही नजर में समझ में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियां हैं।

आदिकाल से लेकर आज तक शिक्षक की भूमिका, उसके कार्य, उसकी जवाबदेही एवं समाज की उसके प्रति अपेक्षा आदि तथ्यों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी शिक्षक को उसकी मुख्य भूमिका के रूप में जाना तो जाता है, लेकिन आज का शिक्षक प्राचीन शिक्षक की भांति गुरूत्व नहीं रखता, हाँ वह एक वेतनभोगी इकाई अवश्य बन गया है। समाज के बदलते नजरिये, बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव शिक्षा जगत पर पड़ा है। आज का शिक्षा जगत एक व्यवसायिक तन्त्र का रूप लेता जा रहा है। साथ ही शिक्षा के बाजारीकरण ने शिक्षक को एक व्यवसायिक तथा बिकाऊ वस्तु बना दिया है, जिसके चलते विद्यालयों की स्थापना विश्वविद्यालयों की स्थापना गुरू–शिष्यों के सम्बन्धों में भी अर्थ ने अपनी अलख जगा दी तथा नाना प्रकार के अन्य प्रभाव यथा आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण आदि का भी शैक्षिक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है।

मूल शब्द – शिक्षण, अभिरूचि, कारक

भूमिका –

शिक्षण न केवल आजीविका उपार्जन का अवसर प्रदान करता है बल्कि यह पुराने एवं नोबल व्यवसाय में शामिल किया जाता है। और शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। परन्तु एक शिक्षक अपने बहुमूल्य कार्यों और जिम्मेदारियों का प्रदर्शन नहीं कर सकता, जबतक कि वह अपने व्यवसाय और व्यक्तित्व को अद्यतन नहीं कर लेता है। इसलिए ही अन्य व्यवसायों की तुलना में

शिक्षण का सार्थक मूल्यांकन आवश्यक हो गया है। कुछ लोगों को शिक्षण व्यवसाय इसलिए भी अच्छा लगता है कि इसमें अन्य प्रकार की गतिविधयों (पाठ्य सहगामी क्रियाएं) की अधिक संभावना होती है। शिक्षण व्यवसाय ने राजस्थान में पिछले कई वर्षों में युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया है और बहुत से युवाओं ने शिक्षण को अपना व्यवसाय भी चुना है और आज एक शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आज भारत में निजी एवं सरकारी शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि होती जा रही है। इससे यह सिद्ध होता है कि युवाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में विकास तो हुआ है। शिक्षण व्यवसाय में नौकरियों की संभावना भी बढ़ी है और अध्यापकों के वेतन में भी वृद्धि हुई है। शिक्षण व्यवसाय में कम घंटों के कार्य में जॉब सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इसके साथ ही प्राईवेट ट्यूशन और कोचिंग संस्थानों में अतिरिक्त पैसा भी कमाया जा सकता है।

व्यक्ति जिस स्थान पर कार्य करता है, वहां के अधिकारी कर्मचारी आदि में आपस में सौहार्दपूर्ण सामंजस्यता, समानता का माहौल नहीं हो तो वह उस व्यवसाय से संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता है। किसी कार्य के सम्पादन से प्राप्त आय भी व्यवसाय रूचि की निर्धारक होती है। एक अध्यापक को विशेषज्ञ होना अति आवश्यक है वह चाहे- नर्सरी विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, मिडिल विद्यालय, उच्च विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, संस्थान या विशेष विद्यालय स्तर का हो, इससे उसकी जॉब सुरक्षा और कुशलता में भी वृद्धि होती है, और उसकी व्यावसायिक प्रतिबद्धता के विकास की संभावना भी बढ़ जाती है। एक अध्यापक के लिए मूलभुत विशेषताओं का होना आवश्यक है जैसे धैर्य, दृढ़ निश्चयी, विद्यार्थियों के अनुसार ग्रहणशील, समरस भाव और खुश मिजाज हो। जिससे विद्यार्थी हमेशा उसे आदर्श के रूप में देखे, न की उससे डरे।

कार्य या व्यवसाय रूचि का न हो तो जीवन जीने के लिए पर्याप्त संतुष्टि नहीं होगी। इसी प्रकार भविष्य में उस व्यवसाय के माध्यम से प्राप्त होने वाले उन्नति के अवसरों की न्यूनतम और अधिकतम मात्रा भी व्यावसायिक रूचि का निर्धारण करती है। वर्तमान परिस्थितियों में अध्यापक अपने व्यवसाय के प्रति स्थानांतरण, परिवार नियोजन, चुनाव तथा सर्वेक्षण आदि कर्त्तव्यों की अधिकता, तथा अधिक योग्यताधारी होते हुए भी निम्न कक्षाओं में अध्यापन करवाने की मजबूरी के कारण उनकी व्यवसायिक सोच तथा उनके कार्य स्तरों में बदलाव आया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने 1998 में विशेष रूप में लिखा था कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की दक्षता और प्रतिबद्धता पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

मर्फी के शब्दों में – ''अभिरूचियाँ उद्देश्यों से जुड़े अनुबंधित उद्दीपक होते है, जो वातावरण की वांछित वस्तुओं, पदार्थो, क्रियाओं व मनुष्यों के गुणों के प्रति पसंदगियों एवं नापसंदगियों के रूप में अभिव्यक्ति होते है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अभिरूचि एक प्रेरणा–शक्ति जो व्यक्ति को कुछ करने, किसी वस्तु अथवा पदार्थ की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है। अभिरूचियों के संबंध वातारण की वस्तुओं व पदार्थो से होता है तथा वंशानुक्रम से संबंधित कारक अभिरूचियों को प्रभावित करते है। अभिरूचि व्यक्ति को सीखने में आने वाले अवरोधों को दूर करने में सहायता करती है। इसलिए थकान व असफलता की स्थिति में प्रतिरोधक शक्ति को कार्य करती है।

अध्ययन का महत्व

शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति अन्तरात्मा के अनुकूल व्यवहार होगा तथा अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होंगे तभी जाकर वह अपने कार्य के प्रति ईमानदार बन सकेंगे। यह शोध इसलिए भी लाभदायक होगा की आयोजना निर्माणकर्त्ता, मनोवैज्ञानिकों, संगठन और प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों और विद्वानों के लिए नवीन विषय वस्तु प्रदान करेगा तथा समाज को योग्य, चरित्रवान एक समरस समाज निर्मित करने वाले तथा अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध शिक्षक प्राप्त हो सकेंगे। शोधकर्ता ने अपने शोध में शामिल चारों चरों की वर्तमान में सार्थक प्रासंगिकता को देखते हुये ही अध्ययन में शामिल किया है। प्रस्तुत शोध का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इस शोध के निष्कर्ष एवं दिये गये सुझावों से शिक्षा जगत को एक नई दिशा दी जा सकेगी।

अध्ययन का औचित्य

यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विशेषकर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने में मूल्यवान सिद्ध होगा। शिक्षक जब शिक्षा को अपना व्यवसाय बनाता है तो स्वभाविक ही उसकी अभिरूचि शिक्षा के प्रति बढ़ जाती है। अपने संस्था के प्रधानाध्यापक के साथ किस तरह का तालमेल होना चाहिए, विद्यार्थियों के साथ किस तरह का व्यवहार होना चाहिए, प्राथमिक स्तर के पुरूष व महिला शिक्षक तथा राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षा के प्रति कितनी अभिरूचि रखते है इन सब समस्याओं का अध्ययन प्रस्तुत शोध में किया गया है। व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का सामना योग्यता और वातावरण के सन्दर्भ में करना चाहिए। व्यक्ति को कभी भी उसके साथ समन्वय

नहीं तोड़ना चाहिए। व्यक्ति किसी वस्तु पर विशेष रूप से अभिरूचि के कारण ही ध्यान केन्द्रित करता है और इसी प्रकार शिक्षक का शिक्षण पर ध्यान के साथ-साथ अभिरूचि का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिरूचि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विधा है जो वस्तु शिक्षक को अच्छी लगती है उसके प्रति उसमें अभिरूचि हो जाती है। अभिरूचि एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है।

समस्या कथन

''प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि का एक अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. लैगिंक आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँः-

1. प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिरूचि नहीं पायी जाती है।
2. लैंगिक आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन का परिसीमनः-

1. यह अध्ययन सीकर जिले के हिन्दी माध्यम वाले प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं मान्यता प्राप्त गैर-राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।
2. इस अध्ययन में 35-35 राजकीय एवं गैर-राजकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. इस अध्ययन में राजकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक (100 पुरूष + 100 महिला) तथा गैर-राजकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक (100 पुरूष + 100 महिला) को लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। यह अनुसन्धान की एक वैज्ञानिक विधि है इसके द्वारा एकत्रित दत्त प्रामाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं ।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-

शिक्षण के प्रति अभिरूचि :- स्वनिर्मित

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :-

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या - 1

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
8	70	22	5.28 से 10.71 तक	65.41 से 74.58 तक	17.85 से 26.14 तक

उक्त सारणी में प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 5.28 से 10.71 प्रतिशत शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारक औसत से उच्च स्तर पर पाये गये। 65.41 से 74.58 प्रतिशत शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारक औसत तथा 17.85 से 26.14 प्रतिशत शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारक औसत से निम्न पाये गये। अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

1. लैंगिक आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या - 2

लैंगिक आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्त मध्यमानों के अन्तरों में सार्थकता की तुलना -

शिक्षकों के वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.05 स्तर	0.01 स्तर
पुरूष	200	230.16	21.03	1.66	सार्थक अन्तर नहीं है।	
महिला	200	234.44	19.66			

विश्लेषण :–

उक्त सारणी में लैंगिंक आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण पर अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है। जिसके अनुसार 230.16 से 234.44 प्राप्त हुआ शिक्षकों का मानक विचलन 21.03 तथा महिला शिक्षकों का मानक विचलन 19.66 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.66 प्राप्त हुआ। इस सन्दर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य –

- अस्थाना, विपिन (1994): मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995): बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाए, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो करोल बाग।
- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह,सूरेश (2001): शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार, जयपुर, 23 चौड़ा रास्ता
- आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1995): भारतीय संस्कृति के आधारा भूत तत्व, मथुरा, अखण्ड ज्योति संस्थान, प्रथम सस्करण।
- आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1996): शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, प्रथम सस्करण।
- कपिल एच. के.(2004): अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4/230, कचहरी घाट।
- गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा डी.डी. (1997): भारतीय समाज, आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेषसन्स।
- खान, ए.आर. (2005) : *जीवन कौषल षिक्षा.* अजमेर, राजस्थान माध्यमिक षिक्षा बोर्ड।
- गुप्त, नत्थूलाल (2000) : *मूल्य परक षिक्षा और समाज.* नई दिल्ली, नमन प्रकाषन
- गौड़, अनिता (2005) : *बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे.* नई दिल्ली, राज पाकेट बुक्स
- चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005): *पारिवारिक सुख के लिए है, किषोर मन की समझ.* नई–दिल्ली, श्रीविजय इन्द्र टाइम्स अंक–8
- चौबे, सरयू प्रसाद (2005): *शिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठ, इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस।